BA (H) I
मैथिली

प्रो० संजीत कुमार राम
अतिथि व्याख्याता
मैथिली विभाग
R.S.J. College, Rajnagar
Madhubani (LNMU)

विद्यापतिक अवहट्ठ रचना :

कीर्तिपताका

विद्यापतिक दोसर अवहट्ठ रचना थिक कीर्तिपताका। एहि मे मध्य महाराज शिव सिंहक यश प्रशस्तिक वर्णन भेल अछि। एहि ग्रंथक रचना मुख्यतया दोहा छन्दमे अछि; मुदा कतहु-कतहु संस्कृत श्लोक एवं कतहु-कतहु गद्य रचना सेहो भेल अछि।

शृंगार रसक प्रशस्तिक पश्चात् विद्यापति एहि ग्रन्थमे सुलतान संग, शिवसिंहक युद्धक वर्णन कएने छथि। प्रारम्भमे अर्द्धनारीश्वर, शिव ओ गणपतिक वन्दनाक पश्चात् कवि सुजनके कहल अछि—

" पण्डित मण्डलि बहुगुणो गौरव कीर मुहेन, वाणी महुर महग्घ रस पिअउ सुकन सवनेन।।

तत्पश्चात् म० शिवसिंहक आचरणक वर्णन

छैत अलङ्कृत गद्यक रचना अछि —

" धम्म देवी व्यवहार लोक नहि, नइ परमेश। रनकोधर उछ्छाह पलटि जनि जागिअ। काने ढलइ। हारिदह खग्गोपरि पड़ी खण्डिअ — तिरहुति कतिपय मञ्जाना बहि रहिअ" अछि।

म० शिवसिंहक प्रशंसाक अनन्तर कतिपय शृंगारिक पद्य अछि जाहि मध्य ओ कहैत छथि —

" कवि भइ नवजयदेव कवि रसमइ रहु सिंगार। जगत सिंह रिपुराज भइ तीनिउ त्रिभुवन सार।

एहि ग्रन्थक एकमात्र खण्डित प्रति नेपाल दरबार पुस्तकालयमे उपलब्ध अछि जकर बीचक २२ गोट पत्र हेरायल अछि, जे पत्र अछिओ तकरहुँ मध्य पंक्तिसभ छुटल अछि। कतेको विद्वानक मत अछि जे वर्तमान उपलब्ध 'कीर्तिपताका' क प्रति वा 'कीर्तिपताका' नहि, कोनहुँ आन्य अलङ्कृत काव्य-ग्रन्थक अंश थिक। प्रायः अधिक कवि रचित जे एहिमे मिझराय गेल अछि।

[illegible signature]
16/05